

रविवार 17 अक्टूबर, 2021

विषय — प्रायश्चित का सिद्धांत

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 25 : 8

---

"यहोवा भला और सीधा है; इसलिये वह पापियों को अपना मार्ग दिखलाएगा।"

---

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 103 : 1-5, 22

- 1 हेमेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे!
- 2 हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना।
- 3 वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है,
- 4 वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता है, और तेरे सिर पर करुणा और दया का मुकुट बान्धता है,
- 5 वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है, जिस से तेरी जवानी उकाब की नाई नई हो जाती है॥
- 22 हे यहोवा की सारी सृष्टि, उसके राज्य के सब स्थानों में उसको धन्य कहो। हे मेरे मन, तू यहोवा को धन्य कह!

पाठ उपदेश

**बाइबल**

**1. भजन संहिता 25 : 1, 6-8**

- 1 हेयहोवा मैं अपने मन को तेरी ओर उठाता हूं।
- 6 हे यहोवा अपनी दया और करुणा के कामों को स्मरण कर; क्योंकि वे तो अनन्तकाल से होते आए हैं।
- 7 हे यहोवा अपनी भलाई के कारण मेरी जवानी के पापों और मेरे अपराधों को स्मरण न कर; अपनी करुणा ही के अनुसार तू मुझे स्मरण कर॥
- 8 यहोवा भला और सीधा है; इसलिये वह पापियों को अपना मार्ग दिखलाएगा।

**2. यूहन्ना 9 : 1 (जैसा)-3, 6-8, 10, 11**

- 1 फिर जाते हुए उस ने एक मनुष्य को देखा, जो जन्म का अन्धा था।

---

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्टरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 2 और उसके चेलों ने उस से पूछा, हे रब्बी, किस ने पाप किया था कि यह अन्धा जन्मा, इस मनुष्य ने, या उसके माता पिता ने?
- 3 यीशु ने उत्तर दिया, कि न तो इस ने पाप किया था, न इस के माता पिता ने: परन्तु यह इसलिये हुआ, कि परमेश्वर के काम उस में प्रगट हों।
- 6 यह कहकर उस ने भूमि पर थूका और उस थूक से मिट्टी सानी, और वह मिट्टी उस अन्धे की आंखों पर लगाकर।
- 7 उस से कहा; जा शीलोह के कुण्ड में धो ले, (जिस का अर्थ भेजा हुआ है) सो उस ने जाकर धोया, और देखता हुआ लौट आया।
- 8 तब पड़ोसी और जिन्होंने पहले उसे भीख मांगते देखा था, कहने लगे; क्या यह वही नहीं, जो बैठा भीख मांगा करता था?
- 10 तब वे उस से पूछने लगे, तेरी आंखें क्योंकर खुल गईं?
- 11 उस ने उत्तर दिया, कि यीशु नाम एक व्यक्ति ने मिट्टी सानी, और मेरी आंखों पर लगाकर मुझ से कहा, कि शीलोह में जाकर धो ले; सो मैं गया, और धोकर देखने लगा।

### 3. यूहन्ना 13 : 1, 3-17

- 1 फसह के पर्व से पहिले जब यीशु ने जान लिया, कि मेरी वह घड़ी आ पहुंची है कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊं, तो अपने लोगों से, जो जगत में थे, जैसा प्रेम वह रखता था, अन्त तक वैसा ही प्रेम रखता रहा।
- 3 यीशु ने यह जानकर कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथ में कर दिया है और मैं परमेश्वर के पास से आया हूं, और परमेश्वर के पास जाता हूं।
- 4 भोजन पर से उठकर अपने कपड़े उतार दिए, और अंगोछा लेकर अपनी कमर बान्धी।
- 5 तब बरतन में पानी भरकर चेलों के पांव धोने और जिस अंगोछे से उस की कमर बन्धी थी उसी से पोंछने लगा।
- 6 जब वह शमौन पतरस के पास आया: तब उस ने उस से कहा, हे प्रभु,
- 7 क्या तू मेरे पांव धोता है? यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि जो मैं करता हूं, तू अब नहीं जानता, परन्तु इस के बाद समझेगा।
- 8 पतरस ने उस से कहा, तू मेरे पांव कभी न धोने पाएगा: यह सुनकर यीशु ने उस से कहा, यदि मैं तुझे न धोऊं, तो मेरे साथ तेरा कुछ भी साझा नहीं।
- 9 शमौन पतरस ने उस से कहा, हे प्रभु, तो मेरे पांव ही नहीं, वरन हाथ और सिर भी धो दे।
- 10 यीशु ने उस से कहा, जो नहा चुका है, उसे पांव के सिवा और कुछ धोने का प्रयोजन नहीं; परन्तु वह बिलकुल शुद्ध है: और तुम शुद्ध हो; परन्तु सब के सब नहीं।
- 11 वह तो अपने पकड़वाने वाले को जानता था इसी लिये उस ने कहा, तुम सब के सब शुद्ध नहीं।
- 12 जब वह उन के पांव धो चुका और अपने कपड़े पहिनकर फिर बैठ गया तो उन से कहने लगा, क्या तुम समझे कि मैं ने तुम्हारे साथ क्या किया?
- 13 तुम मुझे गुरु, और प्रभु, कहते हो, और भला कहते हो, क्योंकि मैं वही हूं।

- 14 यदि मैं ने प्रभु और गुरु होकर तुम्हारे पांव धोए; तो तुम्हें भी एक दुसरे के पांव धोना चाहिए।
- 15 क्योंकि मैं ने तुम्हें नमूना दिखा दिया है, कि जैसा मैं ने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो।
- 16 मैं तुम से सच सच कहता हूं, दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं; और न भेजा हुआ अपने भेजने वाले से।
- 17 तुम तो ये बातें जानते हो, और यदि उन पर चलो, तो धन्य हो।

#### 4. यूहन्ना 19 : 1, 2, 6-11, 14-19

- 1 इस पर पीलातुस ने यीशु को लेकर कोड़े लगवाए।
- 2 और सिपाहियों ने कांटों का मुकुट गूंथकर उसके सिर पर रखा, और उसे बैजनी वस्त्र पहिनाया।
- 6 जब महायाजकों और प्यादों ने उसे देखा, तो चिल्लाकर कहा, कि उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर: पीलातुस ने उन से कहा, तुम ही उसे लेकर क्रूस पर चढ़ाओ; क्योंकि मैं उस में दोष नहीं पाता।
- 7 यहूदियों ने उस को उत्तर दिया, कि हमारी भी व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार वह मारे जाने के योग्य है क्योंकि उस ने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र बनाया।
- 8 जब पीलातुस ने यह बात सुनी तो और भी डर गया।
- 9 और फिर किले के भीतर गया और यीशु से कहा, तू कहां का है? परन्तु यीशु ने उसे कुछ भी उत्तर न दिया।
- 10 पीलातुस ने उस से कहा, मुझ से क्यों नहीं बोलता? क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का अधिकार मुझे है और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है।
- 11 यीशु ने उत्तर दिया, कि यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता; इसलिये जिस ने मुझे तेरे हाथ पकड़वाया है, उसका पाप अधिक है।
- 14 यह फसह की तैयारी का दिन था और छठे घंटे के लगभग था: तब उस ने यहूदियों से कहा, देखो, यही है, तुम्हारा राजा!
- 15 परन्तु वे चिल्लाए कि ले जा! ले जा! उसे क्रूस पर चढ़ा: पीलातुस ने उन से कहा, क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊं? महायाजकों ने उत्तर दिया, कि कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं।
- 16 तब उस ने उसे उन के हाथ सौंप दिया ताकि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए॥
- 17 तब वे यीशु को ले गए। और वह अपना क्रूस उठाए हुए उस स्थान तक बाहर गया, जो खोपड़ी का स्थान कहलाता है और इब्रानी में गुलगुता।
- 18 वहां उन्होंने उसे और उसके साथ और दो मनुष्यों को क्रूस पर चढ़ाया, एक को इधर और एक को उधर, और बीच में यीशु को।
- 19 और पीलातुस ने एक दोष-पत्र लिखकर क्रूस पर लगा दिया और उस में यह लिखा हुआ था, यीशु नासरी यहूदियों का राजा।

#### 5. रोमियो 5 : 8 (परमेश्वर), 10, 11

- 8 परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।

- 10 क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे?
- 11 और केवल यही नहीं, परन्तु हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जिस के द्वारा हमारा मेल हुआ है, परमेश्वर के विषय में घमण्ड भी करते हैं॥

## विज्ञान और स्वास्थ्य

### 1. 18 : 1-12

प्रायश्चित्त परमेश्वर के साथ मनुष्य की एकता का उदाहरण है, जिससे मनुष्य ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम को दर्शाता है। नासरत के यीशु ने पिता के साथ मनुष्य की एकता को सिखाया और प्रदर्शित किया, और इसके लिए हम उसे अंतहीन श्रद्धांजलि देते हैं। उनका मिशन व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों था। उन्होंने जीवन का काम न केवल स्वयं के प्रति न्याय में, बल्कि मनुष्यों पर दया करने में भी किया। यीशु ने निर्भीकता से, इंद्रियों के मान्यता प्राप्त सबूतों के खिलाफ, फरिसासिक पंथों और प्रथाओं के खिलाफ काम किया, और उन्होंने अपनी उपचार शक्ति के साथ सभी विरोधियों का खंडन किया।

### 2. 19 : 6-11, 17-28

यीशु ने मनुष्य को ईश्वर की शिक्षा, यीशु की शिक्षाओं के दिव्य सिद्धांत, और प्रेम के इस तुच्छ अर्थ को मनुष्य की आत्मा, के नियम, और मृत्यु के नियम से मनुष्य की मृत्यु के रूप में समझने की कोशिश की। ईश्वरीय प्रेम का नियम।

पश्चात्ताप और पीड़ा के हर दर्द, सुधार के लिए हर प्रयास, हर अच्छा विचार और काम, हमें पाप के लिए यीशु के प्रायश्चित्त को समझने और उसकी प्रभावकारिता की सहायता करने में मदद करेगा; लेकिन अगर पापी प्रार्थना और पश्चात्ताप करना, पाप करना और क्षमा करना जारी रखता है, तो उसके पास प्रायश्चित्त में बहुत कम हिस्सा है, — परमेश्वर के साथ एकता में, - क्योंकि उसके पास व्यावहारिक पश्चात्ताप का अभाव है, जो हृदय को सुधारता है और मनुष्य को ज्ञान की इच्छा करने में सक्षम बनाता है। जो लोग प्रदर्शन नहीं कर सकते, कम से कम भाग में, हमारे गुरु की शिक्षाओं और अभ्यास के दिव्य सिद्धांत का भगवान में कोई हिस्सा नहीं है। यदि उसके प्रति अवज्ञा में रहते हैं, तो हमें कोई सुरक्षा महसूस नहीं करनी चाहिए, हालांकि भगवान अच्छा है।

### 3. 22 : 11-14, 23-27, 30-31

"अपने स्वयं के उद्धार का काम करें," यह जीवन और प्रेम की मांग है, इस अंत के लिए भगवान आपके साथ काम करते हैं। "जब तक मैं न आऊं तब तक दृढ़ रहना!" अपने इनाम की प्रतीक्षा करें, और "अच्छा करने में थके नहीं।"

त्रुटि से अंतिम उद्धार, जिससे हम अमरता, असीम स्वतंत्रता और पापहीन भावना में आनंदित होते हैं, फूलों के रास्तों से नहीं पहुँचा जा सकता है और न ही किसी के विश्वास के बिना किसी दूसरे के काम के प्रयासों पर विश्वास करके।

न्याय के लिए पापी के सुधार की आवश्यकता है दया ऋण को तभी रद्द करती है जब न्याय स्वीकृत होता है।

#### 4. 23 : 1-11

हमें पाप से बचाने के लिए बुद्धि और प्रेम के लिए स्वयं के कई बलिदानों की आवश्यकता हो सकती है। एक बलिदान, हालांकि, महान, पाप के ऋण का भुगतान करने के लिए अपर्याप्त है। प्रायश्चित्त के लिए पापी की ओर से निरंतर आत्म-विसर्जन की आवश्यकता होती है। भगवान के क्रोध को उनके प्यारे पुत्र पर व्रत किया जाना चाहिए, जो दिव्य अप्राकृतिक है। ऐसा सिद्धांत मानव निर्मित है। प्रायश्चित्त धर्मशास्त्र में एक कठिन समस्या है, लेकिन इसकी वैज्ञानिक व्याख्या है, कि दुख पाप भावना की त्रुटि है जिसे सत्य नष्ट कर देता है, और अंततः पाप और पीड़ा दोनों ही अनन्त प्रेम के चरणों में गिर जाएंगे।

#### 5. 48 : 10-16

गथेसेमेन की घास पर पवित्र पीड़ा में गिरे तड़प के पसीने को याद करते हुए, क्या विष्णुत या ताकतवर शिष्य बड़बड़ाहट करेगा जब वह एक ही कप से पीता है, और अपने विध्वंसक पर पाप का बदला लेने के दुष्परिणाम से बचने के लिए सोचता है, या इच्छा करता है? सत्य और प्रेम कुछ हथेलियों को एक जीवन-कार्य के उपभोग तक सर्वश्रेष्ठ बनाते हैं।

#### 6. 29 : 1-6

ईसाईयों को देश और विदेश में त्रुटि के खिलाफ हथियार उठाने चाहिए उन्हें स्वयं में और दूसरों में पाप से जूझना चाहिए, और इस युद्ध को तब तक जारी रखें जब तक वे अपना कोर्स पूरा नहीं कर लेते। यदि वे विश्वास बनाए रखेंगे, तो उनके पास आनन्द का ताज होगा।

#### 7. 45 : 6-21

हमारे मास्टर ने पूरी तरह से मृत्यु और कब्र पर अपनी जीत में दिव्य विज्ञान का प्रदर्शन किया। यीशु का कर्म पुरुषों के ज्ञान और पाप, बीमारी और मृत्यु से पूरी दुनिया के उद्धार के लिए था। पॉल लिखते हैं: "क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु [प्रतीयमान] के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे" अपने शारीरिक दफन के तीन दिन बाद उन्होंने अपने शिष्यों के साथ बात की। अत्याचारी लोग अमर सत्य और प्रेम को एक कब्र में छिपाने में असफल रहे।

भगवान की जय हो, और संघर्षशील दिलों को शांति मिले! मसीह ने मानव आशा और विश्वास के द्वार से पत्थर को लुढ़का दिया, और ईश्वर में जीवन के रहस्योद्घाटन और प्रदर्शन के माध्यम से, उन्हें मनुष्य के आध्यात्मिक विचार और उनके दिव्य सिद्धांत, प्रेम के साथ संभवतया एक-मानसिक रूप से उन्नत किया।

#### 8. 228 : 25-32

ईश्वर से अलग कोई शक्ति नहीं है। सर्वव्यापी के पास सर्व-शक्ति है, और किसी अन्य शक्ति को स्वीकार करने के लिए भगवान को बेइज्जत करना है विनम्र नाज़रीन ने इस पाप को दूर कर दिया कि पाप, बीमारी और मृत्यु में शक्ति है। उन्होंने उन्हें शक्तिहीन साबित कर दिया। याजकों के गौरव को नम्र करना चाहिए, जब उन्होंने ईसाई धर्म के प्रदर्शन को उनके मृत विश्वास और समारोहों के प्रभाव में देखा।

## 9. 8 : 20-30

अभिव्यक्ति की जो भी उत्कंठा है, उसके साथ विनम्रता के लिए प्रार्थना करने का मतलब हमेशा इसके लिए इच्छा नहीं है। यदि हम गरीबों से दूर हो जाते हैं, तो हम गरीबों को आशीर्वाद देने वाले से पुरस्कार प्राप्त करने के लिए तैयार नहीं हैं। हम बहुत दुष्ट दिल रखने के लिए कबूल करते हैं और पूछते हैं कि यह हमारे सामने नंगे रखा जा सकता है, लेकिन क्या हम इस दिल के बारे में पहले से ही नहीं जानते हैं कि हम अपने पड़ोसी को देखने के लिए तैयार हैं?

हमें खुद की जांच करनी चाहिए और सीखना चाहिए कि दिल का स्नेह और उद्देश्य क्या है, इस तरह से हम केवल वही सीख सकते हैं जो हम ईमानदारी से करते हैं।

## 10. 21 : 1-14

यदि सत्य आपके दैनिक चलने और वार्तालाप में त्रुटि पर काबू पा रहा है, तो आप अंततः कह सकते हैं, "मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ .... मैं ने विश्वास की रखवाली की है।" क्योंकि आप एक बेहतर इंसान हैं। यह सत्य और प्रेम के साथ एक-में-भाग में हमारा हिस्सा है। ईसाई, श्रम और प्रार्थना करना जारी नहीं रखते हैं, क्योंकि दूसरे की भलाई, पीड़ा और जीत की उम्मीद है, कि वे उसके सद्भाव और इनाम तक पहुंचेंगे।

यदि शिष्य आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ रहा है, तो वह अंदर प्रवेश करने का प्रयास कर रहा है। वह भौतिक दृष्टि से लगातार दूर होता जाता है, और आत्मा की अपूर्ण चीजों की ओर देखता है यदि वह ईमानदार है, तो वह शुरू से ही सबसे अधिक लाभ में रहेगा, और जब तक वह खुशी के साथ अपना कोर्स पूरा नहीं कर लेता, तब तक वह हर दिन सही दिशा में थोड़ा-थोड़ा हासिल करेगा।

## दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

## दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

*चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4*

## उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

*चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1*

## कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

*चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6*